CBSE Test Paper 04

Ch-7 साखियाँ एवं सबद

1. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   मोकों कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
   ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
   ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
   खोजी होय तो तुरते मिलिहौं, पल भर की तालास में।
   कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

   i. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता फिरता है और कैसे?
   ii. कवि ने ईश्वर को सब 'स्वाँसों की स्वाँस' में क्यों कहा है?
   iii. प्रस्तुत पद में कवि ने किन बातों पर जोर दिया है?

2. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
   प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ।।

   i. कवि किसे ढूँढ़ रहा है? वह सफल क्यों नही हो रहा है?
   ii. प्रेमी से प्रेमी के मिलने का क्या असर होता है, साखी के आधार पर लिखिए।
   iii. साखी के आधार पर कवि की कोई एक चारित्रिक विशेषता लिखिए।

3. कबीर ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

4. सखियाँ में अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?

5. कबीर द्वारा रचित पदों का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

6. कबीर ने जीवित किसे कहा है? साखियाँ एवं सबद के आधार पर लिखिए।

CBSE Test Paper 04

Ch-7 साखियाँ एवं सबद

Answer

1. i. मनुष्य ईश्वर को विभिन्न स्थानों, जैसे-मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों आदि में खोजता है। वह उसे विभिन्न धार्मिक स्थानों- काशी, काबा और कैलाश में खोजने जाता है । ईश्वर को खोजने के लिए वह यज्ञ, हवन और नाना प्रकार की योग-साधना जैसी क्रियाएँ करता है और बैरागी बन घूमता रहता है।
   ii. प्रत्येक प्राणी में परमात्मा का अंश आत्मा रूप में समाया हुआ है। वह किसी जीव से अलग नहीं है। जीव का अस्तित्व ही उसी ईश्वर के कारण है, इसलिए कवि ने उसे सब स्वाँसों की स्वाँस में कहा है।
   iii. प्रस्तुत पद में कवि ने ईश्वर को अपने भीतर ही खोजने पर बल दिया है। कवि ईश्वर को धार्मिक स्थानों का वासी न कहकर मनुष्य (प्राणी) को अपने भीतर ही खोजने के लिए प्रेरित किया है। उसका मानना है कि ईश्वर तो मनुष्य के अन्दर हैं अतः उसे सच्चे मन से खोजना चाहिए। ईश्वर को मन से खोजना चाहिए।
2. i. कवि प्रेमी अर्थात् सच्चे प्रभु-भक्त को ढूँढ़ रहा है। वह अपने उद्देश्य में इसलिए सफल नहीं हो पा रहा है क्योंकि वह अहंकार में डूबा हुआ है इसलिए वह अपने समान प्रभु भक्त को नहीं खोज पा रहा है |
   ii. प्रेमी अर्थात प्रभु की सच्ची भक्ति करनेवाले दो व्यक्ति जब मिलते हैं तब उनके मन की सारी बुराइयाँ अच्छाइयों में बदल जाती है और वे प्रभु-भक्ति के अद्भुत आनंद में डूब जाते हैं।
   iii. साखी के आधार पर कवि की एक विशेषता यह है कि वह सच्चा ईश्वर भक्त है। उसे दिखावापूर्ण भक्ति पसंद नहीं है।
3. कवि ने सच्चे प्रेमी की यह कसौटी बताई है कि सच्चा प्रेमी वही है जो ईश्वर की भक्ति करते हुए उसे पाने का प्रयास करता है। ईश्वर के अलावा वह किसी सांसारिक वस्तु को नही पाना चाहता। वह लोभ, मोह, माया से ऊपर उठ चुका होता है। सांसारिक आकर्षण तथा बंधन उसके लिए ईश्वर प्राप्ति में बाधक नहीं बन पाते हैं।
4. अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने निम्नलिखित संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है-
   i. मुसलमान काबा को अपना पवित्र तीर्थ स्थल और हिंदू काशी को पावन स्थल मानते हुए राम-रहीम में अंतर करते हैं जबकि धर्म के नाम पर ये भेदभाव मनुष्य द्वारा किया गया है।
   ii. ऊँचे कुल में जन्म लेने से ही व्यक्ति महान नहीं बन जाता है। व्यक्ति की महानता उसके कर्मों पर निर्भर करती है न कि उसके कुल पर।
5. कबीर द्वारा रचित पदों में ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले बाह्यांडबरों तथा दिखावापूर्ण भक्ति का विरोध किया गया है | उन्होंने मनुष्य से तीर्थ स्थानों में ईश्वर को खोजने के लिए किए गए प्रयासों को त्यागकर उसे अपने अन्दर खोजने की सलाह दी है | वे मनुष्य से कहते हैं कि यदि सच्चे मन, भक्ति और श्रद्धा से ईश्वर को खोजा जाए तो वे पल भर की तलाश में ही मिल जाते हैं क्योंकि उनका निवास तो प्रत्येक मनुष्य की प्रत्येक साँस में है | अतः कबीर का मानना है कि सभी तरह के दिखावे का त्याग कर सच्ची लगन और भक्ति भाव से ईश्वर को पाने का प्रयास करना चाहिए |
6. कबीर ने उस व्यक्ति को जीवित कहा है जो राम-रहीम के चक्कर में न पड़कर सभी को एक समान मानता है | राम-रहीम के चक्कर में पड़कर मनुष्य के हाथ कुछ नहीं लगता | अतः इन दोनों से दूर रहते हुए ईश्वर की सच्ची भक्ति करने वाले मनुष्य को ही कबीर ने जीवित कहा है |